International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 607-609

तुजुक–ए–बाबरी एवम् तुजुक–ए–जहांगीरी का तुलनात्मक अध्ययन : मुद्रा एवम् माप–तोल प्रणाली के विशेष सन्दर्भ में

नरेश कुमार
शोधार्थी, इतिहास विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत।

सारांश
मुगलकालीन इतिहास के स्त्रोत के रूप में मुगलशासकों की आत्मकथाओं का अपना एक विशिष्ट महत्वपूर्ण स्थान है। कोई भी दरबारी इतिहासकार बादशाह के कितना ही करीब क्यों न हो वह उसकी कार्यप्रणाली और योजनाओं का मूल्यांकन उतने अच्छे ढंग से नहीं कर सकता जितना बादशाह स्वयं कर सकता है। इसलिए बाबर की आत्मकथा तुजुक–ए–बाबरी और जहांगीर की आत्मकथा तुजुक–ए–जहाँगीरी मुगलकालीन इतिहास के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण स्त्रोत हैं। सुदृढ़ अर्थव्यवस्था किसी भी राज्य की सम्पन्नता का आधार स्तम्भ मानी जाती है और एक बादशाह के लिए उसके राज्य का आर्थिक रूप से सुदृढ़ होना एक अत्यधिक महत्वपूर्ण विषय है। बाबर और जहांगीर एक सुदृढ़ आर्थिक तंत्र के महत्त्व से परिचित थे और इस बात को भली–भाँति जानते थे कि राज्य को एक सुदृढ़ आर्थिक आधार प्रदान किए बिना राज्य को एक स्थायी आधार नहीं दिया जा सकता और उनकी इसी सोच का परिणाम उनकी आत्मकथाओं में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। यही कारण है कि उनकी आत्मकथाओं में मुद्राव्यवस्था, कर प्रणाली, कृषि उत्पादन और व्यापार सम्बंधी विवरण की बहुलता दिखाई देती है। प्रस्तुत शोध पत्र में मुगलशासकों की आत्मकथाओं को आधार बनाकर मुगलकालीन मुद्रा एवं माप तौल प्रणाली को समझने का प्रयास किया गया है।

मूल शब्द : इतिहास, आत्मकथा, मुगलकाल, बाबर, जहांगीर, तुजुक–ए–बाबरी, तुजुक–ए–जहाँगीरी

परिचय
1526 ई० में पानीपत के प्रथम युद्ध में इब्राहिम लोदी को पराजित कर बाबर ने हिंदुस्तान में मुगल राज्य की स्थापना की। परन्तु अब उसके सामने राज्य को प्रशासनिक और विशेष रूप से आर्थिक रूप से सुदृढ़ करने की समस्या थी ताकि इस विजय को चिरस्थायी बनाया जा सके। परन्तु बाबर का सारा जीवन युद्धों में ही व्यतीत हुआ और उन्हें इतना अवकाश नहीं मिला कि वो राज्य को एक सुदृढ़ आर्थिक आधार प्रदान कर पाते। परन्तु जहांगीर की परिस्थितियाँ इसके बिल्कुल विपरीत थी और उसे विरासत में एक सुदृढ़ आर्थिक तंत्र प्राप्त हुआ। इसलिए जहांगीर ने कुछ आंशिक सुधारों के साथ अकबर के समय से चली आ रही व्यवस्था को कायम रखा। परन्तु यह बात निर्विवाद रूप से कही जा सकती है कि बाबर और जहांगीर एक सुदृढ़ आर्थिक तंत्र के महत्त्व से परिचित थे और इस बात को भली–भाँति जानते थे कि राज्य को एक सुदृढ़ आर्थिक आधार प्रदान किए बिना राज्य को एक स्थायी आधार नहीं दिया जा सकता और उनकी इसी सोच का परिणाम उनकी आत्मकथाओं में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। यही कारण है कि उनकी आत्मकथाओं में मुद्राव्यवस्था, कर प्रणाली, कृषि उत्पादन और व्यापार सम्बंधी विवरण की बहुलता दिखाई देती है। बाबर के बारे में पहले ही कहा जा चुका है कि वह सारा जीवन युद्धों में उलझा रहा इसलिए आर्थिक मसलों की ओर ध्यान देने का विशेष अवसर नहीं मिला इसलिए उसके वृतान्त में आर्थिक पहलुओं की चर्चा कम ही दिखाई देती है। जबकि जहांगीर के विवरण के आधार पर मुगल राज्य की अर्थव्यवस्था को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। दोनों ही बादशाहों की आत्मकथा में वर्णित आर्थिक पहलुओं को निम्न उपशीर्षकों के अंतर्गत प्रस्तुत किया जा सकता है।

यदि राज्य की मौद्रिक व्यवस्था और विशेष रूप से राज्य में प्रचलित सिक्को और विभिन्न टकसालो आदि के विवरण के आधार पर दोनों आत्मकथाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तो कुछ सामान्य निष्कर्ष स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किए जा सकते हैं। मौद्रिक व्यवस्था सम्बंधी जहांगीर का विवरण अत्यंत समृद्ध है और वह अपने वृतान्त में राज्य में प्रचलित सिक्कों, विभिन्न टकसालों और उनकी ढ़लाई आदि के सम्बंध में विस्तारपूर्वक चर्चा करता है। केवल अपने समय में ही नहीं अपितु अपने पिता अकबर के दौर में प्रचलित सिक्कों के विषय में भी वह विशेष जानकारी देता है। परन्तु बाबर के वृतान्त में इस प्रकार के विवरण का सर्वथा अभाव दिखाई देता है। ऐसा नहीं है कि बाबर अपने सिक्कों के विषय में कोई जानकारी नहीं देता किंतु उसके वृतान्त में जहांगीर के वृतान्त जैसी समग्रता दिखाई नही देती।

जहांगीर अपनी आत्मकथा के प्रथम वर्ष सम्बंधी विवरण में ही अपने राज्य में प्रचलित सिक्को के विषय में विस्तारपूर्वक चर्चा करता है। वह अपनी आत्मकथा में विभिन्न वजन के साने और चाँदी के सिक्के ढाले जाने की बात करता है। जहांगीर केवल मुद्रा के नाम की ही जानकारी नहीं देता बल्कि प्रत्येक मुद्रा के वजन, तौल और मूल्य सम्बंधी चर्चा भी करता है।

जहांगीर बताता है 100 तोले की मुहर का नाम नूरशाही, 50 तोले की मुहर का नाम नूर सुल्तानी, 20 तोले की मुहर का नाम नूर दौलत, 10 तोले की मुहर का नाम नूर करम, 5 तोले की मुहर का नाम नूर मिहर और 1 तोले की मुहर का नाम नूरजहानी रख गया था जबकि आधे तोले की मुहर नुरानी और पाव तोले की मुहर रवाजी कहलाती थी।[1] सोने के सिक्को के विवरण के पश्चात जहांगीर चाँदी के सिक्को का विवरण प्रस्तुत करता है और बताता है कि चाँदी के सिक्को में 100 तोले के सिक्के का नाम कोकब–ए–ताली, 50 तोले के सिक्के के नाम कोकब–ए–इकबाल, 20 तोले के सिक्के के नाम कोकब–ए–मुराद, 10 तोले के सिक्के के नाम कोकब–ए–बरत्त और एक तोले के सिक्के का नाम जहांगीरी रखा गया जबकि चाँदी के आधे तोले के सिक्के का नाम

सुल्तानी और पाव तोले के सिक्के का नाम निसारी रखा गया।[2] इसके अलावा जहांगीर ने दाम को खैर कबूल नाम दिया। सोने और चाँदी के सिक्कों के अलावा ताँबे के सिक्के भी इसी अनुपात में बनाए गए और प्रत्येक वर्ग के सिक्कों को एक विशेष नाम दिया गया।[3]

यथार्थ में प्रशासनिक एवम् व्यापारिक कार्यों के लिए नकद विनिमय की आधारभूत इकाई चाँदी का सिक्का था जिसे रूपया या रूपी कहा जाता था। मुद्रा की यह इकाई अकबर ने शेरशाह से विरासत में प्राप्त की थी जो परिमाण के अनुसार अपेक्षाकृत भारी थी। वस्तुतः अकबर के शासनकाल में रूपयों का भार यथावत बना रहा जो आईन के अनुसार $11\frac{1}{2}$ (साढ़े ग्यारह) अथवा लगभग 178 ग्रेन था। सिहांसनरूढ़ होने के बाद जहांगीर ने रूपये का भार 20 प्रतिशत तक बढ़ा दिया था। उसने चाँदी के सिक्के का नया भार पारित किया जिसके अनुसार रूपया–ए–जहांगीरी एक तोले के बराबर था। सिंहासनरूढ़ होने के लगभग चौथे वर्ष में जहांगीर ने दूसरा रूपया प्रचलन का आदेश जारी किया जिसे सावल कहा जाता था। इसका भार अकबर कालीन रूपये से 25 प्रतिशत अधिक था, किंतु छठे वर्ष में प्रचलन की कठिनाइयों के बारे में शिकायत होने के फलस्वरूप उसने नवीन मुद्रा को ढालना बंद कर दिया और पुनः पुराने रूपये को प्रचलित कर दिया। वस्तुतः उसमें चाँदी–तोले का भार यथावत् रखा जिससे पुनः स्थापित रूपये का भार 10 मासा बना रहा।[4] जहांगीर के सिक्को पर बादशाह के नाम के साथ–साथ कलमे को भी उद्धत किया गया था। सिक्के के दूसरी ओर शासन वर्ष का भी ठप्पा लगाया गया।[5] जहांगीर ने अपने शासनकाल के 13वें वर्ष में सिक्को में कुछ संशोधन किया। इससे पहले सिक्को पर एक तरफ बादशाह का नाम, दूसरी तरफ टकसाल का नाम और शासन का संवत् और मास होता। जहांगीर ने मास के स्थान पर राशि का उल्लेख करना शुरू कर दिया। जहांगीर स्वयं इस बात का दावा करता है कि उससे पहले ये प्रथा किसी भी मुगल शासक ने नहीं अपनाई।[6]

जहांगीर के सिक्को के विषय में एडवर्ड टेरी बताता है कि जहांगीर के सिक्के दुनिया मे किसी भी देश के सिक्कों से कहीं अधिक शुद्ध होते थे। एडवर्ड टेरी सिक्कों के मूल्य के बारे में बताते हैं कि एक सिक्के का मूल्य दो शीलिंग व सबसे अच्छे सिक्के के मूल्य दो शीलिंग और नौ पेंस के बराबर था। एडवर्ड टेरी गुजरात में प्रचलित महमूदी नामक सिक्के का भी उल्लेख करता है जिसकी कीमत लगभग 12 पेंस के बराबर थी।[7]

अगर हम बाबरनामा में वर्णित मुद्रा सम्बंधी वृतांत की चर्चा करें तो हम पाते हैं कि बाबर के काल में प्रचलित सिक्कों का वर्णन प्रसंगवश यदा–कदा ही किया गया है। सर्वप्रथम बाबर काबुल के संदर्भ में शाहरूखी नाम के सिक्के का उल्लेख करता है और काबुल की जमा का उल्लेख करते हुए बताता है कि वहाँ की जमा 7 लाख शाहरूखी थी।[8] उसके पश्चात बाबर ने किपकी नामक ताँबे के सिक्के का उल्लेख किया है जो अर्सकिन महोदय के अनुसार अंडाकर आवृति का ताँबे का सिक्का था।[9] अपने हिंदुस्तान आक्रमण के समय बाबर सोने की अशर्फीयों और टंके के इस्तेमाल के विषय में भी जानकारी देता है।[10]

माप–तोल सम्बंधी प्रणाली के विषय में भी तुजुक–ए–जहांगीरी से महत्वपूर्ण सूचना प्राप्त होती है। अपने शासन के प्रथम वर्ष का विवरण करते हुए जहांगीर तोले के वजन के बारे में बता करता है और बताते हैं कि एक तोले का वजन ईरान और तुरान के ढ़ाई मिस्कल के बराबर होता था।[11]

जहांगीर के माप–तोल सम्बंधी विवरण मे काफी सटीकता दिखाई देती है और वह बड़ी बारीकी से अपने काल में प्रचलित विभिन्न प्रकार के सिक्कों के वजन के विषय में भी विस्तारपूर्वक उल्लेख करता है। जहांगीर अपने काल में प्रचलित सेर नामक वजन की इकाई के विषय में भी विस्तारपूर्वक उल्लेख करता है और बताता है कि अकबर के शासनकाल में एक सेर तीस दाम का होता था। आरम्भ में जहांगीर के शासनकाल में भी एक सेर तीस दाम का था किंतु सन्यासी जदरूप की सलाह से जहांगीर ने एक सेर को 36 दाम का बना दिया।[12]

बाबर ने हिंदुसतान की तोल व्यवस्था और प्रणाली के विषय में विस्तारपूर्वक चर्चा की है। सबसे पहले बताता है कि 1 टॉक 4 माशा और 32 रत्ती के बराबर होता है।[13] बाबर ने अपने विवरण में इस प्रार के तोल की एक विस्तृत सूची दी है।[14]

क्रम सं०	बाबरनामा में वर्णित तोल की सूची
1.	माशा त्र 1 टॉक त्र 32 रत्ती
2.	5 माशा त्र 1 मिस्काल त्र 40 रत्ती
3.	माशा त्र 1 तोला त्र 96 रत्ती
4.	14 तोला त्र 1 सेर
5.	40 सेर त्र 1 मन
6.	12 मन त्र 1 मनी
7.	100 मनी त्र 1 मिनासा

टॉक के विषय में बाबर कहता है कि इसके इस्तेमाल मोती और जवाहारात तोलने के इकाई के रूप में होता था।[15]

हिंदुस्तान में प्रचलित संख्या पद्धति के विषय में भी बाबर ने विस्तारपूर्वक विवरण दिया है।[16]

100 हलार त्र 1 लाख
100 लाख त्र 1 करोड़
100 करोड़ त्र 1 अरब
100 अरब त्र 1 खरब
100 खबर त्र 1 नील
100 नील त्र 1 पदम
100 पदम त्र 1 संग

बाबर द्वारा वर्णित इन आँकड़ों के माध्यम से एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह भी निकाला जा सकता है कि हिंदुस्तान एक धनी देश है और इसी के कारण आँकड़ें इतने अधिक बड़े दिए गए हैं। इसी संदर्भ में एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि हिंदुस्तान की धन–दौलत हमेशा से बाबर के आकर्षण का केंद्र थी और अंततः उसके हिंदुस्तान आक्रमण का कारण भी सिद्ध हुई। बाबर ने स्वयं इस बात का विवरण दिया है कि हिन्दुस्तान अत्याधिक सोने–चाँदी से भरा हुआ देश है।[17]

सन्दर्भ

1. नुरूद्दीन जहांगीर, *द तुजुक–ए–जहांगीरी*, अनु0 अलेक्जैण्डर रोजर्स, सम्पादित हेनरी बेवरीज, लो प्राईस पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पुनर्मुद्रित, 1989, भाग–1, पृष्ठ–11
2. उपरोक्त
3. उपरोक्त
4. इरफान हबीब, *द करेंसी सिस्टम ऑफ द मुगल अम्पायर*, (1556–1707), मेडिवल इण्डिया क्वार्टली, 4 छै 1–2, अलीगढ़, 1960
5. जहांगीर, *तुजुक*, भाग–1, पृष्ठ–11
6. उपरोक्त भाग–2, पृष्ठ– 7–8

7. टैरी, अर्ली ट्रैवल्स इन इण्डिया, पृष्ठ–302
8. बाबर, जहीरूद्दीन मुहम्मद बाबर, बाबरनामा (मेमवार्स ऑफ बाबर), अनु. ए. एस. बेवरिज, भाग–1, लो प्राइस पब्लिकेशन, दिल्ली, पुनर्मुद्रित 1989, पृष्ठ–221
9. उपरोक्त, पृष्ठ –296
10. उपरोक्त, भाग–2, पृष्ठ–446
11. जहांगीर, *तुजुक*, भाग–1, पृष्ठ–12
12. उपरोक्त, भाग–2 पृष्ठ 108; डब्ल्यू0 एच0 मोरलैण्ड, अकबर से औरंगजेब तक अनुवाद के0 के0 त्रिवेदी, ग्रन्थ शिल्पी, नई दिल्ली, 1997, पृष्ठ –310
13. बाबर, *बाबरनामा*, भाग–2, पृष्ठ–517–518
14. उपरोक्त,
15. बाबर, *बाबरनामा*, भाग–2, पृष्ठ–517–518
16. उपरोक्त, पृष्ठ–518
17. उपरोक्त, पृष्ठ–519